अध्याय

07

छाया मत छूना

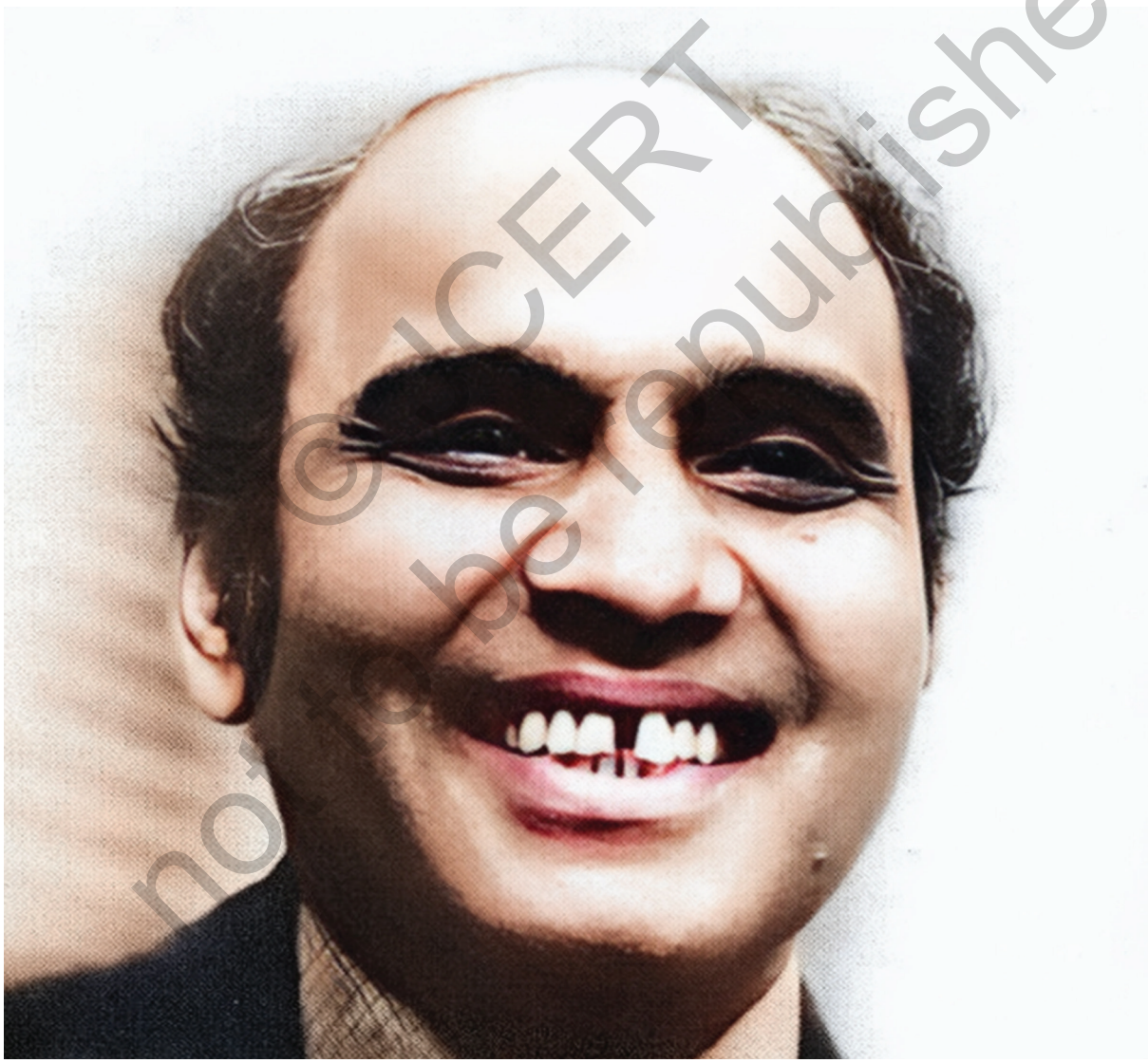

गिरिजा कुमार माथुर

© NCERT not to be republished

लेखक परिचय

जन्म – 22 अगस्त, 1918
जन्म स्थान– गुना मध्य प्रदेश
पिता का नाम– देवीचरण माथुर
माता का नाम– लक्ष्मीदेवी

शिक्षा– एम.ए. अंग्रेजी
उपाधि– एल. एल. बी. (लखनऊ)

विवाह– दिल्ली में शकुन्त माथुर से हुआ, जो अज्ञेय द्वारा सम्पादित सप्तक परम्परा (दूसरा सप्तक) की पहली कवयित्री रहीं।

1943 से 'ऑल इंडिया रेडियो' में अनेक महत्वपूर्ण पदों पर रहते हुए लोकप्रिय रेडियो चैनल 'विविध भारती' उन्हीं की सकल्पना का मूर्त रूप है।
माथुर जी दूरदर्शन के उप–महानिदेशक के पद से सेवानिवृत्त हुए।

निधन– 10 जनवरी, 1994 को नई दिल्ली में गिरिजाकुमार माथुर का निधन हुआं

साहित्यिक परिचय– प्रमुख रचनाएं
काव्य संग्रह– नाश और निर्माण, धूप के धान, शीला पंख चमकीले, भीतरी नदी की यात्रा
नाटक– जन्म कैद
आलोचना– श्री कविता – सीमाएं और संभावनाएं

पुरस्कार
1991 में 'मैं वक्त के सामने' काव्य–संग्रह पर साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।
इसी काव्य संग्रह के लिए 1993 में के. के. बिरला फाउंडेशन द्वारा दिया जाने वाला प्रतिष्ठित व्यास सम्मान प्रदान किया गया।
उन्हें शलाका सम्मान से भी सम्मानित किया जा चुका है।

गिरिजाकुमार माथुर प्रयोगवाद तारसप्त (1943) में शामिल सात प्रख्यात हिंदी कवियों में से एक हैं। उनका लिखा गीत ''हम होंगे कामयाब'' समूह गान अत्यंत लोकप्रिय है। माथुर ने अपनी आत्मकथा मुझे और अभी कहना है पुस्तक में अपने जीवन की यात्रा का वर्णन किया है।

© JCERT not to be republished

पाठ परिचय

'छाया मत छूना' कविता में कवि गिरिजाकुमार माथुर ने जीवन के यथार्थ सुख -दुख का उल्लेख किया है। हमें अपने अतीत के सुखों को याद कर अपने वर्तमान के दुख को और गहरा नहीं करना चाहिए अर्थात व्यक्ति को अपने अतीत की यादों में डूबे न रहकर अपनी वर्तमान स्थिति का डटकर सामना करना चाहिए और अपने भविष्य को उज्जवल बनाना चाहिए।

इस जीवन में सुख दुख दोनों ही हमें सहन करने पड़ेंगे अगर हम दुख से व्याकुल होकर अपने अतीत में बिताए हुए सुंदर दिन या सुखों को याद करते रहेंगे तो हमारा दुख कम होने की बजाय और बढ़ जाएगा। हमारा भविष्य अंधकार में हो जाएगा। अतः हमें अतीत की स्मृतियों को भूलकर अपने वर्तमान में आने वाले दुख को सहन करके अपने भविष्य को सुंदर बनाना चाहिए।

छाया मत छूना

काव्यांश-1

छाया मत छूना

मन,होगा दुख।

जीवन में है सुरंग सुधियां सुहावनी

छवियों की चित्र गंध फैली मन भावनी,

तन-सुगंध शेष रही, बीत गई यामिनी,

कुंतल के फूलों की याद बनी चांदनी।

भूली -सी एक छुअन बनता हर जीवित क्षण

छाया मत छूना

मन होगा दुख दूना।

शब्दार्थ-

छाया-	भ्रम,दुविधा
दूना-	दुगना
सुधियां_	यादें
मनभावनी-	मन को लुभाने वाली
सुरंग-	रंग -बिरंगी
छवियों की चित्र गंध-	चित्र की स्मृति के साथ उसके आसपास की गंध का अनुभव
यामिनी-	तारों भरी चांदनी रात
कुंतल-	लंबे केश

प्रसंग- काव्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक क्षितिज भाग 2 'छाया मत छूना' कविता शीर्षक से लिया गया है। इसके रचयिता गिरिजाकुमार माथुर है। कवि अतीत की पुरानी यादों में जीने के लिए मना कर रहा है।

व्याख्या: - कवि कहता है कि हे मेरे मन! तुम छाया मत छूना,अतीत के सुख को याद कर दुविधा में मत पड़ना। उनको याद कर तेरा दुख दुगना हो जाएगा।जीवन में रंग बिरंगी और सुहानी यादें भरी हुई है। उन्हें याद करके तुम्हारे मन में न केवल मनभावन चित्र भरते हैं,बल्कि उनके साथ जुड़ी मन को अच्छी लगने वाली गंध भी तुम्हारा तन मन को मस्त कर

© JCERT not to be republished

देती है। तुम अपनी प्रिया की यादों में जी कर उसके तन की गंध महसूस कर लेते हो।कवि को चांदनी प्रेयसी के लंबे बालों में लगे सफेद, सुगंधित फूलों की याद दिलाती है।परंतु फिर भी यह यादें छायाएं ही है। इनमें जीने से मन को दुगना दुख मिलता है। इसलिए तुम बीती हुई बातों को याद कर दुविधा में मत पड़ो इससे तुम्हारा दुख और बढ़ जाए। इस प्रकार पुरानी यादों में डूब कर पूरी रात बीत जाती हैं अर्थात समय गुजर जाता है। इसलिए इनसे दूर रहना ही उचित है।

विशेष–

1. *अतीत की पुरानी यादों में जीने के लिए मना करते हैं।
2. *चित्र गंध में रूपक अलंकार का प्रयोग हुआ है।
3. *तत्सम तद्भव शब्दावली युक्त खड़ी बोली का प्रयोग है।
4. *भाषा सरल, सहज प्रवाहमयी है।

काव्यांश–2.

यश है या न वैभव मान है न सरमाया

जितना भी दौड़ तू उतना ही भरमाया।

प्रभुता की शरण- बिंब केवल मृगतृष्णा है,

हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।

जो है यथार्थ कठिन उसका तू कर पूजन -

छाया मत छूना

मन,होगा दुख दूना।

शब्दार्थ–

सरमाया -	पूंजी,
भरमाया -	भरम में डाला,
प्रभुता का शरण -	बड़प्पन का अहसास,
मृगतृष्णा -	कड़ी धूप में रेतीले मैदानों में जल के होने का छलावा,
चंद्रिका -	चांदनी,
कृष्ण -	काली,
यथार्थ -	सत्य।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग 2 से 'छाया मत छूना 'कविता शीर्षक लिया गया है।इसके रचयिता गिरिजाकुमार माथुर है। कवि ने मनुष्य को सुख- वैभव के पीछे न भागकर यथार्थ का सामना करने का संदेश दिया है। बीते हुए सुख को याद करके अपने वर्तमान के दुख को अधिक गहरा नहीं करना चाहिए।

व्याख्या- कवि कहता है हे मनुष्य! प्रताप, सुख -समृद्धि मान -सम्मान, धन -दौलत आदि की दुविधा में पड़कर तुम जितना अधिक दौड़ेंगे उतना अधिक भूल भुलैया में खो जाएंगे क्योंकि अतीत बहुत कुछ घटित हो चुका होता है अपने अतीत की कृतियों पर किसी बड़प्पन का एहसास तुम्हारे लिए मात्र मृगतृष्णा (मृग मरीचिका) बन कर रह जाएगा।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हर चांद के पीछे एक काली रात छुपी होती है। प्रत्येक सुख के अंदर दुख संजोए होता है। सुख के बाद दुख का आना निश्चित होता है। जीवन के

© JCERT not to be republished

कठोर सत्य को पहचान कर उससे सामंजस्य स्थापित करो।यथार्थ को सहर्ष स्वीकार करो।

इसलिए अतीत को भूल कर हमें वर्तमान की ओर ध्यान देना चाहिए चाहिए। कवि कहता है -हे मेरे मन! तुम बीते हुए सुखद दिनों को याद कर दुविधा में मत पड़ना, अन्यथा दुख और अधिक बढ़ जाएगा।

विशेष-

1. *इन पंक्तियों में अतीत की स्मृतियों को भूलकर वर्तमान का सामना कर भविष्य का वरण करने का संदेश देती है।
2. *तत्सम,तद्भव शब्दावली खड़ी बोली का प्रयोग किया है।
3. *भाषा सरल सहज धाराप्रवाह,प्रसाद गुण सर्वत्र विद्यमान है
4. *मुक्त छंद में रचित है।

काव्यांश-3

दुविधा हत साहस है,दिखता है पंथ नहीं,

देह सुखी हो पर मन के दुख का अंत नहीं।

दुख है न चांद खिला शरद -रात आने पर,

क्या हुआ जो खिला फूल रस -बसंत जाने पर?

जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण,

छाया मत छूना

मन,होगा दुख दूना।

शब्दार्थ-

पंथ - राह,

रस बसंत - रस से भरपुर मतवाली बसंत ऋतु,

वरण - अपनाना,

दुविधा हत साहस - साहस होते हुए भी दुविधा ग्रस्त हो रहना।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग 2 से 'छाया मत छूना' कविता लिया गया है। इसके रचयिता श्री गिरिजा कुमार माथुर जी हैं। यह कविता अतीत की स्मृतियों को भूलकर वर्तमान का सामना कर भविष्य का वरण करने का संदेश देती है। बीते हुए सुख को याद करके अपने वर्तमान के दुख को अधिक गहरा नहीं करना चाहिए।

व्याख्या - कवि कहता है कि दुविधा ग्रस्त मनुष्य को जीवन में कोई रास्ता दिखाई नहीं देता है उसे समय पर न मिलने वाली वस्तुओं का दुख होता है। व्यक्ति के पास हिम्मत साहस होते हुए भी वह दुविधा ग्रस्त दिखाई देता है वह जीवन में ऐसे मोड़ पर खड़ा है जहां से उसे कोई रास्ता दिखाई नहीं देता शरीर के आराम के लिए तो सभी तरह के सुख सुविधाएं उपलब्ध हैं कई बार शरीर तो स्वस्थ रहता है लेकिन मन के अंदर हजारों दुख भरे होते हैं मन को इस बात का दुख है की सर्दी की ठंड भरी रात में चांद की चांदनी नहीं बिखरी।कई बार लोग उचित समय पर कुछ प्राप्त न कर पाने की वजह से दुखी रहते हैं, लेकिन जो न मिले उसे भूल जाना ही बेहतर होता है। भूतकाल को छोड़कर हमें अपने वर्तमान पर ध्यान देना चाहिए और एक सुनहरे भविष्य के लिए ठोस कदम उठाना चाहिए।

© JCERT not to be republished

विशेष-

1. *मनुष्य के मन में दुविधा या असमंजस की स्थिति पैदा होती है तो मनुष्य का साहस टूट जाता है।
2. *जो मिला है उसी से संतुष्ट होकर वर्तमान में जीना सीखना चाहिए।
3. *तत्सम तद्भव शब्दावली खड़ी बोली का प्रयोग है।
4. *भाषा सरल,सहज,प्रवाहमयी है।

प्रश्न - अभ्यास

प्रश्न 1. कवि ने कठिन यथार्थ के पूजन की बात क्यों कही है?

उत्तर:- कठिन यथार्थ से अभिप्राय हैं- अपनी जीवन का कठोर सत्य। उस वास्तविक जीवन में सामना करना पड़ता है।वर्तमान की कठोर परिस्थितियों को छोड़कर कोई व्यक्ति कहीं नहीं जा सकता। इसलिए बीते हुए पल अच्छे हो या बुरे, के बारे में सोच कर समय बर्बाद नहीं करना चाहिए। वर्तमान परिस्थिति का डटकर सामना करते हुए अपने भविष्य को उज्जवल बनाना चाहिए अर्थात वर्तमान के सत्य को सहर्ष स्वीकार कर उनकी पूजा करने की बात कवि करते हैं।

प्रश्न 2. भाव स्पष्ट कीजिए:

प्रभुता का शरण -बिंब केवल मृगतृष्णा है,

हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्ति प्रसिद्ध कवि गिरिजाकुमार माथुर द्वारा रचित छाया मत छूना नामक कविता से ली गई है। यहां कवि के कहने का अभिप्राय है-व्यक्ति -सुखी समृद्ध बनने की होड़ में भरमाया हुआ है।उसका भूतकाल की कीर्ति पर उसकी बड़प्पन का किसी मृगतृष्णा (मृग मरीचिका) की तरह छलावा बनकर आता है जो स्थाई नहीं है।

जिस प्रकार प्रत्येक चांदनी रात के बाद अंधेरी रात(काली रात) का आना निश्चित है,ठीक उसी प्रकार प्रत्येक सुख के अंदर दुख विद्यमान रहता है अर्थात भूतकाल को भूल कर हमें अपने वर्तमान की ओर ध्यान देना चाहिए।

प्रश्न 3. 'छाया' शब्द यहां किस संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है ?कवि ने उसे छूने के लिए क्यों मना किया है?

उत्तर:-कवि ने 'छाया ' शब्द अतीत(भूतकाल) की सुखद स्मृतियों के लिए प्रयुक्त किया है।कवि ने उसे छूने के लिए इसलिए मना करते हैं क्योंकि बीते हुए सुख को याद करके वर्तमान के दुख और भी अधिक बढ़ जाते है,बल्कि वर्तमान के दुख को डटकर सामना करते हुए उज्जवल भविष्य के बारे में सोचना चाहिए।

प्रश्न 4. कविता में विशेषण के प्रयोग के शब्दों के अर्थ में विशेष प्रभाव पड़ता है जैसे कठिन यथार्थ।कविता में आए अन्य उदाहरण छांट

© JCERT not to be republished

कर लिखिए और यह भी लिखिए की इसमें शब्दों के अर्थ में क्या विशेषता पैदा हुई है ?

उत्तर:- 1. दुख दूना-यहां दुख दूना में दूना(विशेषण) शब्द के द्वारा दुख की अधिकता व्यक्त की गई है।

2. सूरंग- सुधियां-यहां सुरंग (विशेषण) शब्द के द्वारा सुधि (यादों) का रंग -बिरंगा अर्थात सुखद होना दर्शाया गया है।

3. एक रात कृष्णा-यहां एक कृष्णा (विशेषण) शब्द के द्वारा रात की कालिमा अर्थात अंधकार को दर्शाया गया है।

4. शरद रात -यहां शरद (विशेषण) शब्द चांदनी रात की महत्ता को उजागर कर रहा है।

5. रस बसंत -यहां रस (विशेषण)शब्द बसंत को और अधिक रसीला,मनमोहक और मधुर बना रहा है।

प्रश्न 5.' मृगतृष्णा' किसे कहते हैं,कविता में इसका प्रयोग किस अर्थ में हुआ है?

उत्तर:-मृगतृष्णा प्रकाश से बनने वाली एक प्राकृतिक घटना है। जिसमें गर्मी की चिलचिलाती धूप में प्यास से व्याकुल हिरण जब रेगिस्तान में चमकती रेत या दूर सड़क पर पानी के होने का एहसास होता है और वह उसी भ्रम को वास्तविक पानी समझकर उसे पाने के लिए उसके पीछे भागता रहता है। सामने पहुंचने पर वहां कुछ नहीं दिखाई देता। यह प्राकृतिक के भ्रामक रूप को ही मृगतृष्णा कहा जाता है।

इसका प्रयोग कविता में कवि प्रभुता की खोज में भटकते हुए लोग लोगों के संदर्भ में किया है।यहां मृगतृष्णा जीवन धन -दौलत,वैभव और मान सम्मान के अर्थ में किया गया है अर्थात आज के लोग धन- दौलत,मान -सम्मान के पीछे भागते रहते हैं लेकिन उन्हें प्राप्त नहीं होता।

प्रश्न 6.' बीती ताहि बिसार दे आगे की सुधि लें' यह भाव कविता की किस पंक्ति में झलकता है?

उत्तर:-' बीती ताहि बिसार दे आगे की सुधि लें ' यह भाव कविता की निम्नलिखित पंक्ति में व्यक्त होता है-

जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण

प्रश्न 7. कविता में व्यक्त दुख के कारणों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:-'छाया मत छूना' कविता में कवि ने मानव की इच्छा वृत्ति को दुख का मूल कारण बताया है।क्योंकि इसमें जीवन से वह बड़ी-बड़ी अपेक्षाएं रखता है और जब वह पूरी नहीं होती है, तो दुख का भाव उत्पन्न हो जाता है। भौतिक सुविधाओं का उपयोग करके शरीर तो सुख प्राप्त कर लेता है किंतु मन अपेक्षित वस्तु के न मिलने से दुखी हो जाता है। अतीत की सुखद स्मृतियों के सहारे वर्तमान में जीवन जीना और कठिन होता है। इसलिए समयानुकूल आचरण न करने से जीवन में और दुख आ जा सकता है।

व्यक्ति प्रभुता या बड़प्पन में उलझ कर स्वयं को दुखी करता है।कवि ने इन कारणों से दूर रहकर सिर्फ वर्तमान का सामना करने के

© JCERT not to be republished

लिए कहा है तभी जीवन सही से चल सकता है।

रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 8. 'जीवन में है सुरंग सुधियां सुहावनी 'से कवि का क्या अभिप्राय जीवन की मधुर स्मृतियों से है।आपने अपने जीवन की कौन-कौन से स्मृतियां संजो रखी है ?

उत्तर:- मेरे जीवन की मधुर स्मृतियां इस प्रकार हैं मेरी दादी के *मेरी दादी के द्वारा बचपन में सुनाई गई कहानियां*

1. माता पिता के साथ की गई वैष्णो देवी की यात्रा
2. विद्यालय में मिला पहला पुरस्कार
3. भाई -बहन का बचपन का झगड़ा

प्रश्न 9. 'क्या हुआ जो खिलाफ फूल रस बसंत जाने पर ?'कवि का मानना है कि समय बीत जाने पर भी उपलब्धि मनुष्य को आनंद देती है। क्या आप ऐसे मानते हैं? तर्क सहित लिखिए।

उत्तर:- 'छाया मत छूना 'कविता में कवि ने आशावादी स्वर मुखरित किया है।कवि कहते हैं कि यदि शरद की रातों में चांद नहीं निकला तो क्या हुआ खुशी तब भी आई जब बसंत की ऋतु चली गई? मेरे विचार में यह उचित है 'हमें अपने वर्तमान में जो मिलता है उसे खुली बांहों से स्वीकार कर अतीत के सुख को बुलाकर वर्तमान में जीते हुए भविष्य का वरण करना चाहिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. गिरिजा कुमार माथुर का जन्म कब हुआ था?

(a) 1921 ई. (b) 1918 ई.

(c) 1920 ई. (d) 1922 ई.

उत्तर-(b) 1918 ई.

प्रश्न 2. गिरिजा कुमार माथुर किस सप्तक के कवि हैं,

(a) दूसरा सप्तक (b) तीसरा सप्तक

(c) तार सप्तक (d) चौथा सप्तक

उत्तर-(c) तार सप्तक (1943) में

प्रश्न 3. कवि को किसका दुःख है?

(a) चाँद के न खिलने का

(b) सूर्य के न निकलने का

(c) चाँद के छिप जाने का

(d) बादल के न आने का

उत्तर-(a) चाँद के न खिलने का

प्रश्न 4. 'हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है' पंक्ति का भाव है।

(a) सुख–दुःख के क्षण सदैव स्थिर रहते हैं।

(b) सुख–दुख जीवन के अभिन्न अंग हैं।

(c) चाँद की किरणों में आशा की किरण विद्यमान होती है।

(d) उपरोक्त सभी

© JCERT not to be republished

उत्तर-(b) सुख–दुःख जीवन के अभिन्न अंग हैं।

प्रश्न 5. रस–बसंत का क्या अभिप्राय है?

(a) बसंत का रस

(b) बसंत में रस जाना

(c) सुखमय जीवन

(d) दुखमय जीवन

उत्तर-(c) सुखमय जीवन

प्रश्न 6. 'दुविधा' हत साहस' का क्या अभिप्राय है?

(a) मन का दुविधा से ग्रस्त होना।

(b) साहस का दुविधा से ग्रस्त होना।

(c) दुविधा में रहकर जोखिम भरे कार्य करना।

(d) जीवन का साहसहीन होना।

उत्तर-(b) साहस का दुविधा से ग्रस्त होना।

प्रश्न 7. 'मृगतृष्णा' का अर्थ है–

(a) मृग की प्यास (b) मृग की दौड़

(c) छलावा (d) दिखावा

उत्तर-(d) छलावा

प्रश्न 8. कवि ने मानव को किसका 'पूजन' करने के लिए कहा है?

(a) भगवान का (b) धन का

(c) यर्थाथ का (d) भविष्य का

उत्तर-(c) यर्थाथ का

प्रश्न 9. कवि ने किसके पूजन की बात कही है?

(a) जीवन के सुखद क्षणों की।

(b) जीवन के कटु सच्चाई की।

(c) मन के भ्रम की।

(d) अतीत के सुहावने क्षणों की।

उत्तर-(b) जीवन के कटु सच्चाई की।

प्रश्न 10. 'कृष्णा' शब्द के माध्यम से कवि ने किस ओर संकेत किया है?

(a) श्रीकृष्ण की ओर

(b) दुखरूपी रात की ओर

(c) सुख की रात की ओर

(d) अंधेरी रात की ओर

उत्तर-(b) दुखरूपी रात की ओर

प्रश्न 11. कवि को पंथ दिखाई क्यों नहीं देता?

(a) अंधेरे के कारण

(b) अंधेपन के कारण

(c) दुविधाग्रस्त होने के कारण

(d) घने जंगल के कारण

उत्तर-(c) दुविधाग्रस्त होने के कारण

प्रश्न 12. कवि के जीवन की 'सुरंग–सुधियाँ' क्या हैं?

(a) बीती सुखद स्मृतियाँ

(b) प्रिया के पुष्प गुच्छ

(c) सच्चाई का कटु अनुभव

(d) प्रिया मिलने की सुनहरी यादें

उत्तर-(d) प्रिया मिलन की सुनहरी यादें

प्रश्न 13. कवि का साहस कैसा है?

© JCERT not to be republished

(a) कमजोर (b) कम

(c) अत्यधिक (d) दुविधाग्रस्त

उत्तर-(d) दुविधाग्रस्त

प्रश्न 14. कवि को किसका दुःख है?

(a) चाँद के न खिलने का

(b) सूर्य के न निकलने का

(c) चाँद के छिप जाने का

(d) बादल के न आने का

उत्तर-(a) चाँद के न खिलने का

प्रश्न 15. 'हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है' पंक्ति का भाव।

(a) सुख–दुःख के क्षण सदैव स्थिर रहते हैं।

(b) सुख–दुःख जीवन के अभिन्न अंग हैं।

(c) चाँद की किरणों में आशा की किरण विद्यमान होती है।

(d) उपरोक्त सभी।

उत्तर-(b) सुख–दुःख जीवन के अभिन्न अंग हैं।

प्रश्न 16. 'छाया' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है?

(a) बादल के लिए

(b) छाँव के लिए

(c) मधुर स्मृतियों के लिए

(d) खुशियों के लिए

उत्तर-(c) मधुर स्मृतियों के लिए

प्रश्न 17. चाँदनी रात को देखकर कवि को किसकी याद आती है?

(a) प्रेमिका के केशों में गूँथे फूल

(b) सांसारिक सुख

(c) माँ की

(d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(a) प्रेमिका के केशों में गूँथे फूल

प्रश्न 18. कवि छाया छूने से इसलिए मना कर रहा है क्योंकि यह–

(a) मन में पीड़ा बनकर चुभती रहती है।

(b) मृगतृष्णा मात्र है।

(c) शारीरिक पीड़ा प्रदान करत है।

(d) स्पर्श योग्य नहीं होती।

उत्तर-(a) मन में पीड़ा बनकर चुभती रहती है।

प्रश्न 19. कवि अपने जीवन में क्या पाने के लिए निरंतर दौड़ता रहा?

(a) लोकप्रियता (b) मान–प्रतिष्ठा

(c) अपार संपत्ति (d) उपरोक्त सभी

उत्तर-(d) उपरोक्त सभी

प्रश्न 20. कवि के अनुसार छाया को छूने से क्या होता है?

(a) सुख की प्राप्ति (b) दुःख की प्राप्ति

(c) धन की प्राप्ति (d) भोजन की प्राप्ति

उत्तर-(b) दुःख की प्राप्ति

प्रश्न 21. 'यामिनी' का क्या अर्थ है?

(a) सर्पनी (b) अंधेरी रात

(c) प्रातःकाल (d) चाँदनी रात

उत्तर-(d) चाँदनी रात

© JCERT not to be republished

प्रश्न 22. कवि ने प्रभुता का शरण–बिंब किसे कहा है?

(a) शरण में आए व्यक्ति को

(b) बड़प्पन के अहसास को

(c) घमण्ड को

(d) उदारता को

उत्तर-(b) बड़प्पन के अहसास को

प्रश्न 23. कवि ने प्रभुता की कामना को क्या माना है?

(a) मृगतृष्णा

(b) कटु यर्थाथ

(c) जीवन की सच्चाई

(d) चंद्रिका

उत्तर-(b) कटु यर्थाथ

प्रश्न 24. 'चंद्रिका' का प्रतिकार्थ है .....।

(a) जीवन के सुखद क्षण

(b) चाँदनी

(c) उजाला

(d) सत्य का आभास

उत्तर-(a) जीवन के सुखद क्षण

© JCERT not to be republished